MA Sem-II
MPOLCC-07

Pol. Science

Dr. S.B. Kr.

Political Economy of Int. Relations: Globalisation
अंतर्राष्ट्रीय संबंध का राजनीतिक अर्थशास्त्र: वैश्वीकरण

अंतर्राष्ट्रीय संबंध पर लिखी गई समकालीन रचनाओं में न केवल भूमंडलीकरण (globalisation) का बार-बार प्रयोग किया जाता है बल्कि कुछ विद्वानों का ऐसा मानना है कि भूमंडलीकरण या वैश्वीकरण के प्रभाव को समझे बिना समकालीन अंत० संबंध का अध्ययन कर पाना संभव भी नहीं है। भूमंडलीकरण शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम 1950 के दशक में फ्रांस में अंतर्राष्ट्रीय संबंध के साहित्य में किया गया। फ्रांसीसी भाषा में भूमंडलीकरण के लिए प्रयुक्त शब्द है - mondialisation. लेकिन अंत० संबंध के साहित्य में भूमंडलीकरण का प्रचलन हाल के वर्षों में उस समय हुआ जब अचानक सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (Information and Communication Technology - ICT) में तथाकथित क्रांति हुई।

भूमंडलीकरण एक ऐसी बहुमुखी प्रक्रिया है जिसका प्रभाव मानव के सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक सभी क्षेत्रों में पड़ रहा है। अनेक तत्व हैं जो कि आज भूमंडलीकरण की प्रक्रिया को विशेष बनाते हैं। ये हैं - तीव्र गति की संचार व्यवस्था, बाजार का उदारीकरण तथा उत्पादों (goods) एवं सेवाओं (services) का विश्वव्यापी एकीकरण।

कुछ लेखकों के अनुसार विचार है कि भूमंडलीकरण का आधार या नींव विश्वव्यापी संचार व्यवस्था में टिका हुआ है। चूँकि संचार प्रौद्योगिकी का विस्तार आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में हो चुका है। संचार क्रांति ने यह संभव बना दिया है कि विचार, सूचना तथा सांस्कृतिक मूल्यों (cultural values) को राष्ट्र-राज्यों की सीमाओं से परे विकसित किया जाय। इस प्रक्रिया ने विश्वभर में नई राजनीतिक और सामाजिक गतिशीलता प्रदान की है।

कुछ ऐसे भी लेखक हैं जो भूमंडलीकरण को केवल आर्थिक विशेषताओं पर बल देते हैं। इनके अनुसार भूमंडलीकरण का अर्थ पूर्ण रूप से पारस्परिक सम्बद्ध विश्व बाजार (Interconnected world market) न होकर संसार के विभिन्न देशों में व्यापार

भूमंडलीकरण की अवधारणा

Scanned with CamScanner

के उदारीकरण, पूँजी निवेश तथा सेवाओं की प्रचुरता के कारण बाजारों में संबंध स्थापित (interconnections of market) करना भी होता है।

लेकिन इसके आलोचकों का कहना है कि भूमंडलीकरण दो आयामी (two dimensional) है। प्रथम, यह ऐसी शक्तिशाली प्रक्रिया ~~के रूप~~ है जो आर्थिक विकास को गति देती है, प्रौद्योगिकी का विस्तार करती है तथा यह विकसित और विकासशील देशों में जीवन-स्तर (living-standard) को सुधारने में योगदान करता है। दूसरा, यह राष्ट्र-राज्य की सत्ता पर आघात करता है, स्थानीय संस्कृति और परंपरा में सेंध लगाता है तथा यह आर्थिक और सामाजिक स्थायित्व को भी धमकी देता है।

उपरोक्त विश्लेषण से केवल इतना ही कहा जा सकता है कि यह एक अत्यंत विवादास्पद विषय है। हालांकि विवाद के अनेक मुद्दे हैं लेकिन जो सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा है वो यह है कि इसका राष्ट्र-राज्य की क्षमता और योग्यता पर क्या प्रभाव पड़ा है। स्पष्ट है कि इस बहुमुखी प्रक्रिया को अंत० संबंध की एक सभीक्षात्मक और क्रियात्मक परिभाषा में सीमित नहीं किया जा सकता है।

भूमंडलीकरण की अंतरतम विशेषताएँ :- ~~इसके~~ भूमंडलीकरण के उपरोक्त समझ के आधार पर इस शब्द की पांच प्रमुख विशेषताओं की पहचान की जा सकती है :-

Broad features

1.) यह केवल कुछ सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा प्रौद्योगिकी शक्तियों को दर्शाता है जो कि हाल के समय में स्पष्ट रूप से विख्यात हुए हैं।

2.) इस शब्द का उपयोग अपेक्षाकृत नया है जबकि इससे संबद्ध घटना/घटनाएँ किसी भी प्रकार नवीन नहीं कही जा सकती।

3.) भूमंडलीकरण प्रक्रिया के फलस्वरूप जिन संस्थाओं का उदय हुआ है, वे सभी राष्ट्र-राज्य (संप्रभु राज्य) की शक्ति और सत्ता से बाहर हैं। भूमंडलीकृत होते अंत० संबंधों में राष्ट्र-राज्य ही एकमात्र अभिकर्ता (actors) नहीं रह गए हैं बल्कि अन्य अनेक अभिकर्ता (actors) नई व्यवस्था में प्रमुख भूमिका निभाते हैं जिसमें गैरसरकारी संगठन (NGO), पर्यावरण-

Scanned with CamScanner

संबंधी आंदोलन, बहुराष्ट्रीय निगम, जातीय राष्ट्रीयताएँ (ethnic nationality) तथा बहु-राज्यीय अथवा क्षेत्रीय संगठन शामिल हैं।

4) भूमंडलीकृत विश्व में नए अभिकर्ताओं (actors) की भूमिका में निरंतर बढ़ोतरी हुई है क्योंकि आर्थिक, राजनीतिक और संचार अवसंरचनाओं की संख्या में बढ़ोतरी हुई है। इन जालों (networks) ने राष्ट्र-राज्यों की सीमाओं को खोल दिया है तथा उनके आर-पार लोगों, वस्तुओं, और सेवाओं, विचारों तथा सूचनाओं का आवागमन अत्यंत सरल हो गया है।

5.) भूमंडलीकरण की प्रक्रिया ने न केवल अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को अधिक विस्तृत बना दिया है बल्कि वे अधिक सघन भी हो गए हैं। विश्वव्यापी संचार व्यवस्था (Internet), बहुराष्ट्रीय निगमों के उत्पाद तथा बड़ी संख्या में लोगों का संसार के एक भाग से दूसरे में आवागमन, इन सबने विश्व स्तर पर लोगों के सामाजिक और सांस्कृतिक ~~संबंध~~ बंधन को प्रभावित किया है।

उपरोक्त विशेषताओं का सार यह है कि भूमंडलीकृत होती विश्व व्यवस्था में राष्ट्र-राज्य का एकाधिकार समाप्त हो गया है तथा अब ये अन्य अभिकर्ताओं के साथ विश्व मंच पर भागीदार (partner) के रूप में कार्य कर रहे हैं। घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में किया जाने वाला अंतर अब उतना टिकाऊ नहीं रह गया है जितना पहले था।

भूमंडलीकरण के समर्थन व विरोध में के तर्क :

भूमंडलीकरण के विषय में अलग-अलग बोध या धारणाएँ हैं। यह कहा जाता है कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने अंतः संबंध विषय के आधार के रूप में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रों के मध्य अंतर कम कर दिया है। इसका कुछ लोग स्वागत करते हैं तो कुछ विरोध।

भूमंडलीकरण का स्वागत करने वाले विद्वानों का कहना है कि यह प्रक्रिया विश्व शांति (World peace), मानव सुरक्षा (Human security) और आर्थिक सम्पन्नता (Economic prosperity) को प्रोत्साहित करती है लेकिन दूसरी ओर कुछ लेखकों का मानना है कि भूमंडलीकरण लोकतंत्र, मानव स्वतंत्रता, तथा मानव पहचान के लिए बड़ा खतरा हो सकता है।

Scanned with CamScanner

फिर भी, भूमंडलीकरण के समर्थकों का दावा है कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया के द्वारा 'सर्वदेशीय लोकतांत्रिक समुदाय' (Cosmobolitan democratic community) का विकास हो रहा है। समर्थकों का कहना है कि अपनी उत्पत्ति (origine) से ही राष्ट्र-राज्य (Station-state) विश्व को शांति, मानवाधिकार तथा खुशहाली नहीं दे पाया है। बल्कि आज अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएँ मानव अधिकारों की बहाली, मानव का सम्मान और निर्धनता जैसी समस्याओं के निराकरण का प्रयास कर रही है। अतः एक विश्व सरकार की स्थापना का मार्ग प्रशस्त होना चाहिए जो अपनी नीतियों के क्रियान्वयन के लिए राष्ट्रीय सरकारों पर निर्भर तो रहें परन्तु उन राज्यों पर अपनी कुछ सत्ता व शक्ति का प्रयोग अवश्य करे।

अपने तर्कों के समर्थन में भूमंडलीकरण के प्रशंसक मानते हैं कि संसाधन प्रबंधन तथा पर्यावरण की क्षति को रोकने में राष्ट्र-राज्य किस प्रकार विफल रहे हैं। इसकी तुलना वे इन समस्याओं के समाधान की दिशा में अंतर्राष्ट्रीय अथवा भूमंडलीय संस्थाओं के द्वारा उठाए जा रहे प्रभावी कदमों से करते हैं।

आलोचकों के तर्क भूमंडलीकरण के आलोचकों का तर्क है कि भूमंडलीकरण में अनेक खतरनाक और अंकुशहीन तत्व कार्यरत हैं जिन्होंने राष्ट्र-राज्य के मूलभूत अधिकारों, उसके द्वारा चलेनू अर्थव्यवस्था तथा राजनीतिक प्रबंधन को सुव्यवस्थित रूप से संचालन करने अपनी राष्ट्रीय पहचान बनाए रखने की क्षमता, शक्ति और सत्ता को कुंठित करके राष्ट्रीय समुदायों को अशक्त कर दिया है। आलोचकों ने तीन प्रमुख चिंताएँ व्यक्त की हैं जो अंतर्राष्ट्रीय संबंध के लिए खतरा सिद्ध हो सकती हैं;

(1) राष्ट्रीय आर्थिक हितों से समझौता
(2) राष्ट्र-राज्य की संप्रभुता में कटौती
(3) राष्ट्रीय पहचान को क्षति

अंतः संबंध में भूमंडलीकरण के निहितार्थ :— [Implications for Int. Relations]

भूमंडलीकरण के वर्तमान चरण में, जिसके मूल में सूचना प्रौद्योगिकी तथा एक सशक्त वैश्विक अर्थव्यवस्था है, यह संभव नहीं है कि राष्ट्र-राज्य भूमंडलीय व्यवस्था से अलग रह कर अपनी अर्थव्यवस्था का सही तरीके से

Scanned with CamScanner

संचालन कर सके। अंतर संबंधों में भूमंडलीकरण की प्रक्रिया ने पारस्परिक निर्भरता (Interdependence) को प्रगाढ़ किया है जिसके परिणामस्वरूप संप्रभुता की पारम्परिक परिधियों पर आघात पहुँचा। यह संप्रभुता के राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों रूपों में परिवर्तन का कारण है तथा संप्रभुता के दो तत्वों – सत्ता (Authority) एवं स्वायत्तता (autonomy) में नया समीकरण बनाया है।

भूमंडलीकरण न केवल संप्रभुता के क्षेत्रीय तत्व पर विपरित प्रभाव डाला है, बल्कि उससे भी गंभीर बात यह है कि इसने संप्रभुता के 'पहचान' और 'सत्ता' दोनों तत्वों पर भी आघात किया है। भूमंडलीकरण ने एक ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी है जिसमें संप्रभु राज्यों के द्वारा किए गए निर्णय (decisions) वास्तव में उनकी इच्छा की अभिव्यक्ति प्रतीत नहीं होते। राष्ट्रीय सीमाएँ वास्तव में 'खुली' सीमाएँ बन गई हैं। राज्य में निहित असीमित सत्ता के पिघल जाने (dilute हो जाना) से संप्रभुता के 'पहचान' तत्व की भी क्षति हुई है।

पिछले कुछ वर्षों में अंतर्राष्ट्रीय विधाओं (regimes) के क्षेत्र में मानवाधिकार, पर्यावरण संरक्षण, अंतर आर्थिक स्थिरता जैसे विशेष पक्षों का विकास हुआ है। इन नए विकसित मानकों को संप्रभुता पर अंकुश के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए बल्कि ये तो उस विकास के प्रतीक हैं जिन्हें संप्रभुता महत्व देती है। अतः भूमंडलीकरण के संदर्भ में यह कहना ज्यादा उचित है कि संप्रभुता इस समय समायोजन (adjustment) के दौर से गुजर रही है। जिस प्रकार अतीत में संप्रभुता के औपचारिक तथा ठोस तत्वों में तालमेल किया गया था, उसी प्रकार भूमंडलीकरण के परिवेश में इसकी पुनर्रचना की जा रही है। भूमंडलीकृत राज्य में 'सत्ता' और संप्रभुता के दोनों पक्ष 'सत्ता' और 'नियंत्रण क्षमता' परिवर्तनीय (variables) हो गए हैं। अर्थात् संप्रभुता में मौलिक परिवर्तन हो रहे हैं।

संप्रभु राज्य अब आंतरिक और बाह्य (अंतर्राष्ट्रीय) दोनों क्षेत्रों में नया स्वरूप ग्रहण कर रहा है। ऐसा वह अपनी कुछ पारंपरिक

Scanned with CamScanner

क्षमताओं में कमी करके कर रहा है। आज संप्रभु राज्य अपनी कुछ क्षमताओं को त्याग कर कुछ नई क्षमताओं (सामर्थ्य) को प्राप्त कर रहा है। वह अपने कुछ कर्तव्यों को अंतर्राष्ट्रीय और पारराष्ट्रीय संस्थाओं को हस्तांतरित कर रहा है दूसरी ओर इन संस्थाओं के प्रभावी क्रियान्वयन पर निगरानी (vigilance) की नई सत्ता या नए अधिकार प्राप्त कर रहा है। इसके ~~प्रक्रा~~ फलस्वरूप संप्रभुता की विषय वस्तु तथा उसकी औपचारिक धारणा में भूमंडलीकरण की वर्तमान प्रक्रिया के परिवेश में कुछ आमूल परिवर्तन अवश्य हो रहे हैं। अतः इन नए आधारों पर कार्य करते हुए अंत० संबंध के नए सिद्धांत को विकसित करना संभव हो सकता है।

—— x ——

Scanned with CamScanner